INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व (उत्तर प्रदेश राज्य के विशेष सन्दर्भ में)

(Importance of Agriculture in Indian Economy: With Special Reference to the state of Uttar Pradesh)

डॉ. राजकुमार

सहायक अध्यापक

बेसिक शिक्षा परिषद,

उत्तर प्रदेश, भारत

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/08.2022-94334179/IRJHIS2208011

प्रस्तावना :

प्रस्तुत शोध–पत्र में भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व को स्पष्ट किया गया है। शोध क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के साथ–साथ अध्ययन की आवश्यकता को भी स्पष्ट किया गया है। प्राचीनकाल से ही कृषि, भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख क्षेत्र रहा है। कृषि प्रधान व्यवसाय होने के कारण भारत जैसे विकासशील देश की राष्ट्रीय आय का सबसे बड़ा स्रोत, रोजगार एवं विदेशी व्यापार का आधार है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था की रीड़ तथा विकास की कुन्जी है।

अल्प विकसित राष्ट्र, जिसका प्रमुख व्यवसाय कृषि है, अपने सीमित साधनों द्वारा आर्थिक विकास की ऊँची दर तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि आधारभूत कृषि उद्योग का विकास न किया जाय। प्राकृतिक साधनों की पर्याप्तता के बावजूद पूँजीगत एवं अन्य विशिष्टता प्राप्त संसाधनों की अपर्याप्तता के फलस्वरूप भारत में औद्योगीकरण की धीमी प्रगति एवं तीव्रगति से बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण उत्पन्न श्रमशक्ति को रोजगार, कृषि एवं सम्बद्ध उद्योगों में ही उपलब्ध हुआ। देश की आर्थिक प्रगति एवं बेरोजगारी दूर करने हेतु कृषि के विकास का बड़ा महत्व है। क्योंकि कम पूँजी लगाकर कृषि क्षेत्र में अधिक उत्पादन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त कृषि विकास के लिए विदेशी मुद्रा की उतनी आवश्यकता नहीं होती जितनी कि औद्योगिक विकास के लिए। देश में योजनाकारों ने देश की प्रगति के लिए जो रूपरेखा तैयार की उसमें औद्योगीकरण के साथ–साथ कृषि के विकास पर भी विशेष बल दिया।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व –

कृषि विकास के महत्व को स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कोल एवं हूबर ने कहा है कि "सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कृषि का विकास पहले होना चाहिए और यदि किसी क्षेत्र के अविकसित होने में दूसरे क्षेत्र के विकास में बाधा पड़ती है तो वह अविकसित क्षेत्र कृषि ही होगा जो अन्य क्षेत्रों के विकास को बाधित करेगा।"[1]

प्रो. शुल्ट्न के अनुसार,– "कोई भी अल्प विकसित राष्ट्र खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्त किए बिना आर्थिक विकास की कल्पना नहीं कर सकता।"[2]

भारत गाँवों का देश है। यहाँ कुल 605224 गाँवों में देश की 72.5 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि है।[3] भारतीय अर्थव्यस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कई दशकों से भी अधिक अवधि में औद्योगिक क्षेत्र में हुए संगठित प्रयास के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का गौरवपूर्ण स्थान बना हुआ है। देश के उद्योग धन्धे, विदेशी व्यापार, विदेशी मुद्रा अर्जन, विभिन्न योजनाओं की सफलता, राजनैतिक स्थायित्व भी कृषि पर ही निर्भर रहा है।

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व को निम्नवत् स्पष्ट किया जा सकता हैः–

1. कृषि राष्ट्रीय आय में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है क्योंकि देश की राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् नियोजित विकास एवं औद्योगीकरण के फलस्वरूप यद्यपि धीरे–धीरे इस क्षेत्र के योगदान में कमी आती जा रही है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 1950–51 में 55.40 प्रतिशत योगदान था, वहीं यह 2007–08 में घटकर 16.4 प्रतिशत तथा 2008–09 में पुनः घटकर 15.7 प्रतिशत रह गया है।[4] फिर भी राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान महत्वपूर्ण बना हुआ है।

2. रोजगार की दृष्टि से भारत में कृषि प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अधिकांश जनसंख्या के जीवनयापन का साधन है। लगभग 52.1 प्रतिशत देश की कार्यशील जनसंख्या प्रत्यक्ष रूप से कृषि व्यवसाय में लगी है।[5] इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से लोग कृषि पदार्थों के व्यापार, परिवहन आदि में लगातार अपनी आजीविका चलाते हैं। इस तरह अन्य व्यवसाय मिलकर भी रोजगार की दृष्टि से कृषि से बहुत पीछे हैं।

3. कृषि, उद्योगों का आधार है। सूती वस्त्र, चीनी, पटसन, चाय, कॉफी, रबर, वनस्पति घी, तेल आदि अनेक उद्योग अपने कच्चे माल के लिए मुख्य रूप से कृषि पर ही निर्भर हैं। लघु उद्योगों में चावल, आटा, तेल व दालें आदि मिलों को कच्चा माल भी कृषि से ही प्राप्त होता है।

4. विदेशी व्यापार की दृष्टि से भी कृषि का स्थान महत्वपूर्ण है देश के कुल निर्यात का एक बड़ा भाग कृषि पदार्थों तथा इससे सम्बन्धित पदार्थों से होता है। भारत से निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएँ हैं– कॉफी, चाय, चावल, तेल, काजू, गरम मसाले तथा कपास आदि। विगत कुछ वर्षों में भारत में उक्त कृषि उत्पादों के निर्यात की मात्रा व मूल्य दोनों में वृद्धि हुई है। यह वृद्धि विकास के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

5. जहाँ तक भूमि के उपयोग का प्रश्न है वर्तमान समय में देश में उपलब्ध कुल भूमि (3287.3 लाख हेक्टेयर) 141.1 मिलियन हेक्टेयर (कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 43 प्रतिशत)[6] के भाग पर खेती की जाती हैं। इस तरह देश में भूमि क्षेत्रफल का सर्वाधिक भाग खेती के काम में आता है।

6. राजस्व में योगदान की दृष्टि से देश का सहकारी बजट कृषि क्षेत्र से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होता है। देश में कराधान, ऋण तथा व्यय सम्बन्धी नीतियों का निर्धारण मुख्य रूप से कृषि उत्पादन की मात्रा के आधार पर किया जाता है। देश में प्रति वर्ष कृषि विकास पर भारी मात्रा में धन व्यय किया जाता है तथा देश को प्रतिवर्ष करोड़ों रूपये की आय मालगुजारी तथा कृषि कर से प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त कृषि वस्तुओं के निर्यात से सरकार को राजस्व की अतिरक्ति प्राप्ति भी प्रतिवर्ष होती है।

7. अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी भारतीय कृषि का स्थान बहुत ऊँचा है। अनेक कृषि पदार्थों के उत्पादन में

भारत को विश्व में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है उदाहरण के लिए– मूँगफली तथा चाय के उत्पादन में भारत का विश्व में प्रथम स्थान है जबकि चावल, कपास, गन्ना तथा प्राकृतिक रबर के उत्पादन में पाँचवा स्थान है। लाख के उत्पादन में तो भारत का एकाधिकार है।

8. सामाजिक विकास में योगदान की दृष्टि से जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग कृषि पर आश्रित रहने के कारण भारत में कृषि का सामाजिक एवं राजनैतिक महत्व भी अधिक है। कृषि की व्यावसायिक स्थिरता, सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्थिरता को भी प्रभावित करती है। जो राष्ट्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

भारत सरकार की कृषि नीति :–

भारत जैसे विकासशील देश का आर्थिक विकास यहाँ के कृषि क्षेत्र के उत्पादन की योग्यता, ग्रामीण क्षेत्रों में संरचनात्मक–परिवर्तन, वांछित आधारभूत संरचना तथा कृषि क्षेत्र में व्याप्त तकनीकी एवं संस्थागत सुधारों आदि पर निर्भर करता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व तक ब्रिटिश सरकार भारतीय कृषि के विकास के प्रति उदासीन बनी रही जिसके परिणामस्वरूप देश में बढ़ती जा रही जनसंख्या का प्रभाव यह हुआ कि यहाँ खाद्यान्नों की माँग एवं पूर्ति के बीच का सन्तुलन बिगड़ गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में कृषि के क्षेत्र के विकास के लिए योजनाबद्ध रूप से सघन एवं सतत् प्रयास आरम्भ किये गये ताकि खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्ति के साथ–साथ उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति की समुचित व्यवस्था की जा सके तथा कृषि उत्पादों के निर्यात से विदेशी पूँजी अर्जित कर देश में आर्थिक विकास को गतिमान बनाया जा सके।

आजादी के बाद सरकार ने देश में खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्म–निर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से कृषि विकास पर विशेष ध्यान दिया। अब कृषि नीति का लक्ष्य खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के साथ–साथ उद्योगों व निर्यात के लिए कच्चे माल का उत्पादन बढ़ाना, उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर वस्तुओं को उपलब्ध कराना, कृषि क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना तथा देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना हो गया। इस हेतु 1949 में भारत सरकार ने एक व्यापक खाद्यान्न आत्मनिर्भरता आन्दोलन चलाया। सन् 1950–51 में आन्दोलन को गहन स्वरूप प्रदान किया गया और एक "समन्वित उत्पादन कार्यक्रम" बनाया गया, जिसका लक्ष्य खाद्यान्न, जूट, कपास और चीनी के उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था। अगले वर्ष इसे प्रथम पंचवर्षीय योजना का अंग बना लिया गया।

पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत कृषि नीति :–

देश की पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि के महत्व को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया।

प्रथम पंचवर्षीय योजना का कार्यकाल 1 अप्रैल 1951 से 31 मार्च 1956 तक था। इस योजना में कृषि विकास को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया। कृषि के स्थाई विकास के लिए आधुनिक उपकरण, उन्नतशील बीज, रासायनिक खाद और सिंचाई की सुविधाओं का विकास करना योजना का मुख्य लक्ष्य था। इसके अतिरिक्त इस योजना में अपनाई गई कृषि नीति में कृषि मूल्यों को उचित स्तर पर बनाए रखना, विपणन, संग्रह एवं साख सुविधाओं की व्यवस्था करना तथा कृषि का पुनर्गठन करना आदि शामिल था। इस योजना में कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्र तथा सिंचाई एवं बाढ़ नियंन्त्रण पर कुल 724 करोड रूपये व्यय किये गये जो कुल योजना परिव्यय का 37 प्रतिशत था।[7]

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में कृषि के विपरीत औद्योगीकरण को प्राथमिकता प्रदान की गई। इस योजना में कृषि नियोजन के प्रमुख तथ्य इस प्रकार थे– भूमि उपयोग का नियोजन, अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन लक्ष्यों का निर्धारण, विकास कार्यक्रमों व सरकारी सहायता को भूमि उत्पादन लक्ष्यों एवं नियोजन से सम्बन्ध करना। इस योजना में कृषि तथा सिंचाई एवं बाढ़ नियंन्त्रण पर कुल 979 करोड़ रूपये व्यय किए गये जो कुल योजना परिव्यय का 20.9 प्रतिशत था। इस योजना में उर्वरकों, उन्नतशील बीजों, कृषि क्षेत्र के विस्तार को बढ़ावा दिया गया। द्वितीय योजना में बाधाओं के कारण कृषि उत्पादन में गिरावट आई तथा देश में खाद्यान्न का अभाव बढ़ गया। इस पर विचार करने हेतु सरकार ने अशोक मेहता की अध्यक्षता में एक खाद्यान्न जाँच कमैटी गठित की जिसने उपयोगी सिफारिशें की। फोर्ड फाउण्डेशन के कृषि विशेषज्ञों के दल ने जो भारत भ्रमण के लिए 1959 में आया था, खाद्य समस्या सुलझाने के लिए समुचित सुझाव दिए।

तीसरी पंचवर्षीय योजना भारतीय कृषि के लिए बहुत ही उल्लेखनीय रही है। इस अवधि में कृषि विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए कृषि उत्पादन का विस्तार करने और कृषि पर से जनसंख्या का दबाव कम करने के लिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था का बहु–विधि विकास करने का लक्ष्य रखा गया। तीसरी योजना में कृषि एवं सिंचाई तथा बाढ़ नियंन्त्रण पर 1754 करोड़ रूपये व्यय किए गये जो कुल योजना व्यय का 20.5 प्रतिशत था। इसके बाद पंचवर्षीय योजनाओं का संचालन नहीं हो सका परिणामस्वरूप एक–एक वर्ष की तीन योजनाएं चलायी गयीं। इस तरह तीन वार्षिक योजनाओं में कृषि पर कुल योजना परिव्यय का 24.60 प्रतिशत खर्च किया गया।

वर्ष 1964–67 के दौरान पड़े भयानक सूखे के पश्चात कृषि में नई विकास तकनीकी का सफल प्रयोग किया गया जिससे कृषि उत्पादन मात्रा में भारी वृद्धि का युग प्रारम्भ हुआ, जिसे हरित क्रान्ति का नाम दिया गया। हरित क्रान्ति भारतीय कृषि में लागू की गई। हरित क्रान्ति के फलस्वरूप भारतीय कृषि निर्वाह स्तर से ऊपर उठकर आधिक्य स्तर पर आ गई। छठे दशक के उत्तरार्द्ध में कृषकों ने अधिक उपज देने वाले उन्नतशील बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, आधुनिक कृषि उपकरणों एवं भूमिगत जल का व्यापक उपयोग किया। साथ ही सरकार ने संस्थागत ऋणों में वृद्धि का प्रयास किया। इसका प्रभाव यह हुआ कि खाद्यान्नों के उत्पादन एवं प्रतिव्यक्ति उपलब्धता में पर्याप्त वृद्धि हो गई।

चौथी पंचवर्षीय योजना जो एक अप्रैल 1969 से लागू हुई उसमें कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की गई। इस योजना में कृषि द्वारा सिंचाई एवं बाढ़ नियंन्त्रण पर 3674 करोड़ रूपये व्यय किए गये जो कुल योजना व्यय का 23.3 प्रतिशत था।[9] इस योजना में कृषि क्षेत्र की प्रगति संतोषजनक नहीं रही।

पाँचवी पंचवर्षीय योजना (1974–1979) में कृषि तथा सिंचाई और बाढ़ नियंन्त्रण पर कुल 8742 करोड़ रूपये व्यय किये गए जो कृल योजना का 22.10 प्रतिशत था।

भूमि सुधार सम्बन्धी उपायों का क्रियान्वयन, कृषि मूल्य नीति का संचालन, जल एवं भूमि प्रबन्धन की उचित व्यवस्था, रासायनिक खादों के प्रयोग में वृद्धि तथा संस्थागत साख एवं प्रमाणित बीजों की उपलब्धता का विस्तार आदि किया गया।

कृषि वित्त का प्रगतिशील संस्थाकरण, कृषि तकनीकी के प्रचार के लिए सरकारी प्रयासों के साथ–साथ गैर सरकारी संगठनों की भी सहायता प्राप्त करना तथा क्रियात्मक कृषि शिक्षा पर बल देना इस योजना में कृषि

उत्पाद की वार्षिक वृद्धि दर 4.2 प्रतिशत अंकित की गई।

छठी पंचवर्षीय योजना में कृषि, सिंचाई और बाढ़ नियंन्त्रण को प्रमुख स्थान दिया गया। इस योजना में कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्र पर कुल 26131 करोड़ रूपये व्यय किए गये जो कुल योजना व्यय का लगभग 23.9 प्रतिशत था।[10] छठी योजना के प्रमुख कार्य थे– (1) लघु एवं सीमांत कृषकों, भूमिहीन श्रमिकों विशेषकर अनुसूचित जाति एवं जनजाति के परिवारों पर विशेष ध्यान देना। (2) सिंचाई, सकल फसल क्षेत्र तथा फसल गहनता क्षेत्र में वृद्धि करना। (3) कृषि तकनीकी को सुधारना तथा कृषि आगतों के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देना। (4) भूमि सुधार तथा चकबन्दी के कार्यक्रमों को अधिक प्रबलता से क्रियान्वित करना। (5) तिलहन, दालों और कपास के उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि पर विशेष ध्यान देना। जिसका उद्देश्य कृषि तथा कृषि जनित उद्योगों पर अधिक आश्रित रहकर बेरोजगारी का हल खोजना था।

सातवीं पंचवर्षीय योजना में कृषि तथा सम्बन्धित क्षेत्र सिंचाई एवं बाढ़ पर 48099 करोड़ रूपये व्यय किए गये, जो कुल योजना परिव्यय का 22 प्रतिशत था।[12] इस योजना का आधारभूत लक्ष्य कृषि विकास की गति को तेज करना और अधिक उपयोग के लिए खाद्यान्नों और खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था। योजना में चकबन्दी कार्यक्रम के संचालन पर जोर दिया गया। सातवीं योजना में, राष्ट्रीय तिलहन विकास कार्यक्रम सामाजिक वानिकी, भूमि संरक्षण तथा साख विस्तार आदि पर भी विशेष बल दिया गया। सातवीं पंचवर्षीय योजना में व्यापक पैमाने पर फसल बीमा योजना प्रारम्भ की गई। सातवीं योजना में कृषि विकास की दर 2.5 प्रतिशत लक्ष्य के विपरीत 3.0 प्रतिशत वार्षिक रही।

आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992–1997) में कृषि एवं ग्रामीण विकास को केन्द्रीय महत्व प्रदान किया गया। आठवीं योजना में कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्र, सिंचाई और बाढ़ नियंन्त्रण पर 101599 करोड़ रूपये व्यय किए गये जो कुल योजना परिव्यय का लगभग 20.9 प्रतिशत था।[12] इस योजना में कृषि पदार्थों के परिष्करण विक्रय तथा भण्डारण की विशेष व्यवस्था, सिंचाई की क्षमता का अधिकाधिक उपयोग तथा जल संरक्षण पर जोर दिया गया। आठवीं योजना में कृषि क्षेत्र में प्राप्त वास्तविक दर 3.7 प्रतिशत वार्षिक थी।

नौवीं पंचवर्षीय योजना (1997–2002) में यह स्वीकार किया गया कि कृषि हमें सबसे ज्यादा संख्या में आजीविका प्रदान करती है। यह क्षेत्र उन्नत आय स्तरों, रोजगार वृद्धि और क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने की एक सर्वोत्तम गारन्टी है। हमारी विकास नीति में इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिसके लिए निजी प्रयास और सरकारी समर्थन दोनों की ही विशेष रूप से जरूरत है। इस योजना में कृषि एवं सम्बद्ध कार्यक्रम एवं सिंचाई और बाढ़ नियंन्त्रण पर कुल 161791 करोड़ रूपये व्यय किए गये जो कुल योजना परिव्यय का लगभग 19.8 प्रतिशत रहा। इस योजना में कृषि विकास की दर को 3.9 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा गया, जो प्राप्त नहीं हो सका।

दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002–2007) में कृषि एवं सम्बद्ध कार्यक्रम तथा सिंचाई एवं बाढ़ नियंन्त्रण पर कुल 290645 करोड़ रूपये व्यय किए जाने का प्रस्ताव रखा गया जो कुल योजना परिव्यय का 24.4 प्रतिशत है। इस योजना पर कृषि विकास के लिए आर्थिक ढाँचे–विशेष रूप से सिंचाई, ग्रामीण सड़कें, व्यवस्थित बाजारों में पर्याप्त मात्रा में निवेश बढ़ाना और उसमें राज्य की महत्वपूर्ण भूमिका सुनिश्चित करना, एक साझा न्यूनतम कीमत नीति के अन्तर्गत किसानों को प्रोत्साहन देना और कृषि वस्तुओं को विश्व व्यापार में प्रतियोगी बनाना

आदि थे।

ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना जो केन्द्र सरकार की महत्वपूर्ण योजना मानी गई है जो 1 अप्रैल 2007 से शुरू हुई और 31 मार्च 2012 को समाप्त हो गई, के अन्त तक देश में चावल, गेहूँ एवं दालों का उत्पादन क्रमशः 10, 8 और 2 प्रतिशत बढाने के उद्देश्य से केन्द्र सरकार द्वारा वित्त पोषित राष्ट्रीय खाद्यान्न सुरक्षा मिशन प्रारम्भ किया गया। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में कृषि सम्बद्ध एवं स्थाई व बाढ़ नियंन्त्रण पर कुल 674105 करोड़ रूपये खर्च करने का प्रावधान था जो कि कुल व्यय का 18.5 प्रतिशत है।[13] केन्द्र सरकार ने ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के लिए राष्ट्रीय नीति 2007 घोषित की है जो राष्ट्रीय नीति 2007 के नाम से जानी गई है इस नीति के अन्तर्गत कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि, कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार, कृषि क्षेत्र में नयी तकनीकी का प्रयोग तथा सिंचाई सुविधा का विकास एवं प्रसार के साथ–साथ कृषि उत्पादों के निर्यात पर फोकस किया गया है।

उत्तर–प्रदेश में कृषि की स्थिति :–

सन् 1757 के बाद उत्तर–प्रदेश में अपना आधिपत्य कायम करने के बाद अंग्रजों ने आगरा और अवध प्रांत को मिलाकर एक संयुक्त प्रांत बनाया तथा इसे यूनाइटेड प्रॉविन्स (यू0पी0) नाम दिया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1950 में इसका नाम बदलकर उत्तर–प्रदेश रख दिया। 1 अगस्त 2000 को लोकसभा तथा 10 अगस्त, 2000 को राज्य सभा में उत्तर–प्रदेश पुनर्गठन विधेयक पारित कर उत्तर–प्रदेश के 13 जिलों को प्रथक कर एक नये राज्य उत्तरांचल का गठन किया गया।

उत्तर–प्रदेश की अर्थव्वस्था का प्रमुख आधार कुषि है क्योंकि यहाँ की 73 प्रतिशत आबादी कृषि से सम्बन्धित है और यह प्रदेश देश का 18.6 प्रतिशत खाद्यान्न उत्पादित करता है।[14] यह आलू, गन्ना, तथा तिलहन का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। यहाँ उद्योगों के विकास का प्रमुख आधार कृषि ही है। उ0प्र0 देश का सर्वप्रमुख चीनी उत्पादक राज्यों में से एक है। हथकरघा उद्योग यहाँ का सबसे बड़ा उद्योग है। उ0प्र0 में गन्ना, तिलहन, चावल, आलू के साथ–साथ मक्का, बाजरा, जौ का उत्पादन भी व्यापक स्तर पर किया जाता है। मूँगफली, गन्ना, कपास, अलसी, चाय, तिल, सरसों और तम्बाकू यहां की प्रमुख नकदी फसलें हैं। देश की कुल कृषि योग्य भूमि का 12 प्रतिशत भाग इसी प्रदेश में स्थित है। राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का पशुपालन सहित 34.9 प्रतिशत का योगदान है। राज्य की 88 प्रतिशत भूमि पर खेती की जाती है। जो कुल आय का 68 प्रतिशत है। यह प्रदेश अफीम की खेती करने वाला प्रमुख प्रदेश है। इस प्रदेश में 45 प्रतिशत गन्ना, 38 प्रतिशत आलू, 14 प्रतिशत तिलहन तथा 20 प्रतिशत खाद्यान्न उत्पादित किया जाता है। उत्तर–प्रदेश सरकार ने हरित क्रान्ति को लागू कर कृषि वैज्ञानिकों ने कृषि को नई दिशा प्रदान की है। राज्य की कृषि व्यवस्था को व्यावहारिक रूप देने के लिए प्रयोगशाला से खेतों तक कार्यक्रम को अधिक महत्व प्रदान किया जा रहा है।

राज्य के 168 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कृषि की जाती है।[15] कृषि की आधुनिक तकनीकी का उपयोग कर उत्पादन तथा उत्पादकताओं में वृद्धि की दिशा में प्रयास का ही फल है कि कृषि ने प्रदेश को खाद्य सुरक्षा में आत्मनिर्भर बनाते हुए आवश्यकता से अधिक उत्पादन की ओर पहुँचाया है। उत्तर–प्रदेश में औसत कृषि का आकार 0.9 हैक्टेयर है।[16] जो कृषि उत्पादन में रूकावट उत्पन्न करता है। 73 प्रतिशत से भी ज्यादा किसान सीमान्त किसान हैं। 1 हैक्टेयर के आस–पास जोतों वाले कृषकों की संख्या मात्र 15 प्रतिशत है।

इस प्रकार शोध अध्ययन यह बताता है कि उत्तर–प्रदेश राज्य में कृषि का क्षेत्रफल औसत होने के बावजूद भी लगभग सभी प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है जो राज्य की जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय है।

सन्दर्भ –

1. डॉ. जय प्रकाश मिश्र : कृषि अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, पृ.–448
2. वही, पृ–128
3. भारत– 2005, योजना भवन, भारत सरकार का प्रकाशन, पृ0–17
4. भारतीय अर्थव्यवस्था : साहित्य भवन, आगरा, प.–81
5. एल. एन. कोली : भारतीय अर्थव्यवस्था, जवाहर पब्लिकेशन, आगरा पृ.–75
6. भारतीय अर्थव्यवस्था : प्रतियोगिता साहित्य, साहित्य भवन, आगरा पृ.–4
7. भारतीय अर्थव्यवस्था : जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010
8. भारतीय अर्थव्यवस्था : जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010
9. भारतीय अर्थव्यवस्था : जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010
10. भारतीय अर्थव्यवस्था : जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010
11. वही
12. भारतीय अर्थव्यवस्था : जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010
13. भारतीय अर्थव्यवस्था : जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010
14. भारतीय अर्थव्यवस्था : प्रतियोगिता साहित्य भवन, आगरा प.–42
15. भारत– योजना भवन, भारत सरकार का प्रकाशन, पृ.–17
16. उ. प्र. एक दृष्टि में : ल्यूसैट पब्लिकेशन, मेरठ